Indian J. Soc & Pol.1(2): 35-38:2014 **ISSN : 2348-0084**

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विनोवा भावे के राजदर्शन की प्रासंगिकता

राजित राम यादव[1]

[1]प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, स्व सं से महेन्द्र महाविद्यालय हलधरपुर, मऊ, उ0प्र0, भारत

पूर्वपीठिका

वर्तमान समय में रूग्ण मानसिकता के वशीभूत होकर मानवीय विकृतियॉ हावी हो रही हैं। समाज में ईर्ष्या, द्वेष बढ़ रहा है। नैतिक पतन चरमाकाष्ठा पर पहुँच रहा है। पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान विज्ञान के वशीभूत होकर हम अपने मूल आदर्श और मान्यताओं को विस्मृत करते जा रहे हैं। मानव जाति को इस बंधन से मुक्त कराने के लिए समय–समय पर समाज सुधारकों और बुद्धिजीवियों द्वारा चिंतन किया जाता रहा है। बिनोवा भावे का चिंतन उसी श्रृँखला का प्रमुख पड़ाव है। प्रस्तुत शोध पत्र में समकालीन परिस्थितियों में महान भारतीय राजपनीतिक विचारक व भूदान आन्दोलन के प्रणेता विनोवा भावे के राजदर्शन की प्रासंगिकता को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

आचार्य विनोवा भावे शांन्ति और अहिंसा के अगदूत थे। वे जनता के बहुमुखी उत्थान में विश्वास रखते थे और समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करना चाहते थे। सम्पूर्ण मानवीय क्रान्ति उनके जीवन का उद्देश्य था। जिसमें मानव का सम्पूर्ण विकास हो, वे ऐसी समाज व्यवस्था के लिए प्रयासरत थे जो सत्य और प्रेम पर आधारित हो। विनोवा जी ने हिंसा के सिद्धान्त को मूखर्तापूर्ण बतलाया। उनका मानना था कि अपरिग्रह और अस्तेय द्वारा समस्त सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बुराइयों को दूर किया जा सकता है। अश्पृस्यता और ऊँच–नीच की भावना का अन्त करना उनके चिंतन का आधार था। गाँधी जी के विचारों को कार्य रूप में परिणत करने का जो कार्य जो विनोवा जी ने अपने हाथों में लिया वे उसे वह निःस्वार्थ भाव से जीवन–पर्यन्त किया । उन्होने पद, स्वार्थ, आत्म प्रचार तथा सुख को त्याग कर भारतीयों के समक्ष ही नही अपितु विश्व के सम्मुख अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया।

विनोवा जी केवल एक दार्शनिक और द्रष्टा ही नही अपितु प्रयोगी भी थे। उन्होंने अपने दर्शन को लोक–जीवन में चरितार्थ करने का नैतिक प्रयोग किया। उनका भू–दान, ग्रामदान आन्दोलन सहयोगात्मक क्रान्ति का अभूतपूर्व प्रयोग पारस्परिकता की सुधा से परिपूर्ण था। उनका विचार था कि मनुष्य की शक्ति का मूल्य तभी है जब वह समाज उत्थान के काम आये। इसलिए उन्होने राजनीति की जगह लोकनीति को अपनाया। लोकनीति में प्रत्येक नागरिक कर्तव्य के प्रति जाग्रत होगा। वे ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें राजनितिक दल नहीं होगा । प्रत्येक नागरिक आत्म अनुशासन का पालन करेगा स्वतंत्रता इसकी पहली शर्त होगी।

एक राजदार्शनिक के रूप में विनोवा जी ने स्वराज्य को अपनाया उन्होने स्वराज्य का अर्थ बताते हुए कहा कि स्वराज्य वैदिक परिभाषा का शब्द है। उसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है स्वराज्य माने प्रत्येक नागरिक का राज्य अर्थात ऐसा राजा जो अपना लगे अर्थात सबका राजा दूसरे शब्दों में राम–राज्य (भावे,1956,पृ1) राज्य और स्वराज्य दोनों अलग–अलग से कल्पनायें है। राज्य हिंसा से प्राप्त किया जा सकता है जबकि स्वराज्य अहिंसा के बिना असम्भव है। इसलिए बुद्धिजीवी पुरूष राज्य नही बल्कि स्वराज्य का सृजन करना चाहते हैं। स्वराज्य का लक्षण बताते हुए विनोवा जी ने कहा था कि दुनियाँ की कोई भी दूसरी सत्ता अपने उपर न चलाने देना स्वराज्य का पहला लक्षण है। किसी सत्ता पर हम ना चलें और किसी दूसरे पर अपनी सत्ता ना चलायें, स्वराज्य का दूसरा लक्षण है किसी की सत्ता हम पर न चले और हम किसी दूसरे पर अपनी सत्ता न चलायें दोनो बाते मिलकर स्वराज्य होती है। (भावे,1956,पृ8)

इस प्रकार स्वराज्य में अमीर–गरीब के बीच कोई भेद–भाव ना रहे, सभी नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। जनता को लगे की अपना राजा है, अपनी सरकार है। राजदार्शनिक के रूप में विनोवा जी ने तीन शासन पद्धतियों का विचार दिया–

सर्वायतन पद्धति

सर्वायतन् शासन आर्थात् सभी व्यक्ति मिलकर समता के विचारों से अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करे। इस शासन पद्धति में अधिक से अधिक लोग शासन कार्यो में भाग लेते हैं जिसे हम प्रजातंत्र के रूप में जानते है। लेकिन प्रजातंत्र का रूप धारण करने वाली यह पद्धति "जितने व्यक्ति

1: Corresponding Author

उतने मत" के सिद्धांत को अपनाती है। इसमें श्रेष्ठ निर्णय का अभाव होता है जबकि सर्वायतन् पद्धति में सर्वसम्मति से निर्णय लिया जाता है।

एकायतन् पद्धति

एकायत्न पद्धति से तात्पर्य कोई बुद्धिमान अथवा क्षमता से युक्त व्यक्ति सबकी ओर से प्रशासन करे । इस शासन पद्धति में वंश परम्परा में आनेवाली राज्यतंत्रीय शासन प्रणाली है।

अल्पसंख्यातन् पद्धति

इस शासन प्रणाली में एक ये अधिक व्यक्ति शासन करते हैं। यह हिंसा, युद्ध और पराक्रम द्वारा सत्ता प्राप्त होती है। इसे विनोवा जी जातिवाद, फासिस्टवाद कहा है।

विनोवा जी ने जिन तीन पद्धतियों का सुझाव दिया उसमें उन्होने सर्वायतन को श्रेष्ठ बताया लेकिन सर्वायतन् पद्धति भी व्यक्ति के कार्य कुशलता, योग्यता और सज्जनता पर निर्भर करती है। उनका यह कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि राजव्यवस्था कितनी ही अच्छी क्यों ना हो प्रत्यक्ष व्यवहार में उसकी अच्छाई किसी न किसी उन व्यक्तियों की योग्यता और सज्जनता पर ही आधृत है जिन्हे समाज की ओर शासन सूत्र सौंपें गये हों । साधारणतः अच्छे आदमी ही चुने जायें ऐसी योजना उत्तम राज्य पद्धति का अंग और लक्षण है। (नागर, पृ 17)

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनता के सहयोग के बिना कोई भी शासन पद्धति सफल नही हो सकती है। शासन की सफलता के लिए जनता का सहयोग आवश्यक है। जनता शासन के सिद्धान्तों और प्रकारों से बंधी नहीं होती है। वह जीवन से संबंन्धित है जब तक उसका जीवन आनंद पूर्वक व्यतीत होता है और वे जीवन यापन में व्यवधान नहीं पाती तक उसके लिए कोई भी शासन पद्धति अच्छी है।

शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए विनोवा जी ने कुछ माप दण्ड भी निर्धारित किए हैं। जो निम्नलिखित हैं–

(1) सर्व राष्ट्रीय मातृ भावना

(2) राष्ट्र के लोगों का ज्ञान पूर्वक यथा शक्ति सहजस्फूर्त और आर्थिक सहकार

(3) समर्थ अल्प संख्यको और सर्व साधारण बहुसंख्यको का हितैवन्य

(4) सबके सर्वांगीण विकास की दृष्टि

(5) राजसत्ता का व्यापकतम विभाजन

(6) अल्पमत शासन

(7) शुलभतम् तंत्र

(8) न्यूनतम् व्यय

(9) कम से कम रखवाली

(10) मुक्त ज्ञान विज्ञान

विनोवा जी ने कहा कि राजा का कर्तव्य है कि वह कुटुम्ब की आर्थिक व्यवस्था को समाज में लागू करे और "लगड़े तथा अन्धे, की कहावत को चरितार्थ करे ।

सत्ता का विकेन्द्रीकरण

विनोवा जी सत्ता के विकेन्द्रीकरण में विश्वास रखते थे वे प्रशासन के स्थान पर स्वशासन में विश्वास रखते थे उन्होने कहा था कि जनता को हमें केवल सुशासन के लिए ही नही बल्कि स्वशासन के लिए तैयार करना है।(भावे,1957,पृ17) हमने देखा कि स्वशासन का एक पहलू विकेन्द्रीकृत सत्ता है अर्थात् सारी सत्ता गांव मे विखरी होनी चाहिए और गांव के लोगों को अपना कारोबार स्वंय चलाना चाहिए। गांव की खुशहाली में ही देश की खुशहाली है, में विश्वास करते थे इसलिए उन्होने सत्ता के विकेन्द्रीकरण द्वारा गांव को स्वाबलम्वी बनाना चाहते थे ।

राजनीति की जगह लोकनीति

राजनीति की जगह विनोवा जी लोकनीति की स्थापना करना चाहते थे । लोकनीति का शाब्दिक अर्थ–लोक कल्याण के लिए बनायी गयी नीति अर्थात जनता के हित में तैयार की गयी नीति । मार्च 1948 में विनोवा जी ने सर्वोदय समाज की स्थापना किया सर्वोदय समाज को लोकनीति कहा जाता है।क्योकि इसका उद्देश्य नागरिक स्वतंत्रता, अल्पमत की सुरक्षा, सभी लोंगों को अधिक से अधिक सुरक्षा प्रदान करना इत्यादि प्रमुख था। वे हृदय परिवर्तन के माध्यम से किए गये कार्य को लोकनीति कहते है। राजनीति नहीं – हृदय पूर्ण सेवा सहानुभूति पूर्वकं राजनीति में सत्ता की प्रतिस्पर्धा और राजा ग्रहण तथा प्रतिनिधित्व के लिए उम्मीदवारी होती है। लेकिन लोकनीति में लोक चरित्र के विकास के लिए सेवा की तत्परता होती है। उम्मीद्वारी का निषेध होता है। लोकनीति में सभी के कल्याण की भावना निहित होती है। यह सर्वउत्थान में विश्वास करता है। लोकनीति सभी नागरिकों के सकारात्मक मत को व्यक्त करता है।

दलविहीन लोकतंत्र

आचार्य विनोवा भावे जी ऐसी शासन प्रणाली की स्थापना करना चाहते थे जिसमें कोई राजनीतिक दल नहीं होगा । वे आधुनिक लोकतंत्र में दलों की कार्य प्रणाली से

सहमत नहीं थे क्योंकि आधुनिक राजनीतिक दल का उद्देश्य शक्ति और सत्ता को प्राप्त करना है। इसके लिए वे हमेशा निरन्तर प्रयास करते थे । लोक तंत्र का सिद्धान्त है कि शासन सत्ता समस्त जनता में निहित हो परन्तु व्यवहार में देखने को यह मिलता है कि शासन में राजनीतिक दलों का वर्चस्व रहता है। दलीय व्यवस्था समाज के वातावरण को दूषित कर देती है। उनका विचार था कि "जहॉ राजनीतिक दलों का बोल–बाला है वहां दल सत्ता सूत्र को अपने हाथो में रखता है। फलस्वरूप दोंनों में संघर्ष की स्थिति बनी रहती है"। (भावे,1956पृ5) दलगत राजनीति जनता के शासन पर कुठाराघात करती है। जनता अपने प्रतिनिधियों को स्वामी समझ बैठती है। विचित्र स्थिति है कि सेवक स्वामी बन बैठा है। सर्वोदय समाज ग्राम दान, शान्तिसेना ये सभी बतलाती है कि हमें अपना कार्य स्वयं करना चाहिए। किसी दल विशेष को मत देकर हम अपने आप को सत्ता के अधीन कर देते है। जनउपक्रम और जनशक्ति के संधर्ष के लिए हमें राजनीतिक दलों को रोगों से मुक्ति पानी होगी। (भावे,1956,पृ45)

विनोवा जी ने दल विहीन लोक तंत्र में दो महत्वपूर्ण सिद्धात का प्रतिपादन किया। प्रथम–निर्वाचन के स्थान पर सर्वसम्मति को अपनाना तथा बहुमत के निर्णय के स्थान पर मतैक्य के सिध्दांत को प्रतिष्ठत करना। दूसरा–नाम निदेशन की प्रणाली कार्यान्वित करना । इस प्रकार विनोवा जी ऐसी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे कोई राजनीतिक दल न हो और निर्वाचन सर्वसम्मति से हो। जाति, धर्म, लिंग, वर्ग इत्यादि ऊपरी विभिन्नताओं से निर्पेक्ष्य मानवता ही लोकतंत्र में सुरक्षा की अधिकारणीय है। जब नागरिक स्वयं जागरूकता के साथ अपने पडोसी के अधिकारों का ध्यान रखता है, तो पुलिस या न्यायालय को समझौता कराने की गुन्जाइश नहीं होती है तभी हम दल विहीन लोकतंत्र को साक्षात्कृत कर सकते हैं।

निर्वाचन सम्बधी विचार

आधुनिक चुनाव पद्धति से बिनोवा जी संतुष्ट नहीं थे क्योंकि चुनाव में जातिवाद , भाषा , क्षेत्रवाद इत्यादि भाग ले रहे हैं। निर्धन वर्ग की कोई आवाज नहीं होती है। आज चुनाव में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्ग में भेद पैदा कर लिया है जो चुनाव के समय विभाजन उत्पन्न करते है। निर्मला उपाध्याय ने भी वर्तमान निर्वाचन पद्धति को दोषपूर्ण बताते हुए कहा कि –वर्तमान चुनाव पद्धति अस्वस्थ और अनुचित है। अप्रत्यक्ष लोक तंत्र में दलीय आधार पर चुनाव लड़े जाते है। मनुष्यों की मनोवृत्ति वदल जाती है। उनका सम्प्रदाय बन जाता है। फिर नागरिकता उम्मीदवारी में बदल जाती है"। (उपाध्याय,1971पृ41)

विनोवा भावे ने कहा था कि "चुनाव को एक खेल समझें। तो आज उसमें जो बुराइयाँ होती है, वे नहीं होगी, जिसने आज चुनाव जीत लिया है उसे राज्य कारोबार चलाने का ईनाम मिल गया है और जो चुनाव हार गया है उसे सार्वजनिक सेवा का नारियल। दोंनों का दोंनों ओर से लाभ है। उसमें अपना क्या बिगड़ा, वे हारे तो भी उनकी जीत होती है। (भावे,1956,पृ6) इस प्रकार सभी उम्मीदवारों को एक ही मंच पर इकट्ठा होकर अपनी नीति को जनता में समझाये । दोंनों एक दूसरे की उपस्थिति में आलोचना–प्रयालोचना तो कुछ बुराइयाँ दूर हो सकती है। इस तरह हर प्रवक्ता को बोलने का समय देना चाहिए और भाषण के बाद जनता का प्रश्न करने की सुविधा होनी चाहिए । अलग–अलग विचार रखने वाली पार्टियां अपने कार्यक्रम के आधार पर चुनाव जीतें परन्तु चुनाव के बाद उम्मीदवार को पार्टी का नहीं बल्कि जनता के प्रतिनीधि के रूप में कार्य करना चाहिए । इससे शान्ति व्यवस्था को बढावा मिलेगा और जनता को लगेगा कि अपना शासन है।

निष्कर्ष

आधुनिक युग में विज्ञान की प्रगति में जहां मानव जीवन को सुखी समृद्धशाली बनाने के लिए अनेक भौतिक साधन उपलब्ध कराये हैं वहीं विकास की अंधी दौङ ने मानवता के शान्ति और सद्भाव पूर्ण विकास की राह में अनेक बाधायें भी उत्पन्न की है जिससे मनुष्यों में एक छटपटाहतट सी उत्पन्न हो गयी हैं। जिसने सामाजिक अलगाव की भावना को प्रोत्साहित किया । विश्व में व्याप्त हताशा, कुण्ठा, किंकर्त्व्यविमूढ़ता के वातावरण में विनोवा जी का राजनीतिक चिन्तन महत्वपूर्ण हो गया है। उन्होंने अपने विचारों द्वारा समाज को एक नयी दिशा देने का प्रयास किया तथा दण्ड की जगह प्रेम की स्थापना पर बल दिया । वे ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जो सत्य और प्रेम पर आधारित हो । वे शान्ति एवं सहयोग का वातावरण विश्व में निर्मित किया जाय । सब लोग एक दूसरे पर विश्वास करने लगेगें तो शासन की आवश्यकता नहीं होगी। उन्होंने हमें अच्छी तरह समझाया कि हमारा लक्ष्य इग्लैड, अमेरिका के अन्धानुकरण में नहीं है अपितु संस्कृति के अनुरूप लोकतंत्र का नव संस्करण करने में है।

आज राजनीतिक दलों में नैतिक और मानवीय मूल्यों का हास्स हो रहा है। पद और शक्ति पाने के लिए हिंसा, प्रलोभन, झूठेवादे आदि का प्रयोग किया जाता है। इससे लोकतांत्रिक व्यवस्था खोखली हो रही है। ऐसे में विनोवा जी का यह विचार "चुनाव को एक खेल के समान समझने" अपनाने की महती आवश्यकता है।

सन्दर्भ

भावे, विनोवा : *इलेक्शन डेमोक्रेसी*

भावे, विनोवा : *लोकनीति* सर्व सेवा संघ राजघाट वाराणसी

भावे, विनोवाः *भूदान यज्ञ* अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट काषी 1956

भावे, विनोवाः *सर्वोदय विचार और स्वराज्य शास्त्र,* सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी,काशी चौथा संस्करण

उपाध्याय, निर्मलाः *लोकतंत्र की समीक्षा,* दल निरपेक्ष लोकतंत्र,1971

नागर, पुरूपोतम् : *आधुनिक भारतीय सामाजिक राजनीतिक चिन्तन,* हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर,राजस्थान,

लोकनीति में राजनीति का प्रवेश व नई व्यवस्था के लिए जनता का घोषणा पत्र सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी